प्रथम अध्याय

कवि भारतभूषण अग्रवाल : जीवन तथा रचनात्मक परिचय

प्रथम अध्याय

कवि भारतभूषण अग्रवाल : जीवन तथा रचनात्मक परिचय

1.0 भूमिका -

हर युग अपने साथ कुछ न कुछ नया लाता है। हर युग की परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं। छायावाद के बाद हिंदी साहित्य में जो काव्य प्रवृत्तियाँ प्रकाशित हुई, उनमें खासकर 'प्रयोगवाद' और 'नयी कविता' ने अपना विशेष महत्त्व रखा है। 'प्रगतिवाद' और 'प्रयोगवाद' में थोडा अंतर दिखाई देता है। प्रगतिवादी कविता में यथार्थ का स्पष्ट दर्शन होता है। उनके द्वारा छूटे सत्य को प्रयोगवाद ने अपना ध्येय बनाया। वैयक्तिक कुण्ठा, निराशा, अनास्था, घुटन और अहं को प्रयोगवादी कवियों ने वाणी दी हैं।

दोनों धाराएँ अपनी-अपनी सीमाओं के साथ आगे बढ़ रही थी, तथी देश को स्वतंत्रता मिली किन्तु लोगों की समस्याएँ दूर नहीं हो सकी। लोग अनेक समस्याओं में घिर गये थे। इन्हीं परिस्थितियों में 'नयी कविता' का उदय हुआ। कवि को नई दिशा मिल गई। 1940 ई.में 'तारसप्तक' के प्रकाशन तक 'नयी कविता' चलती रही। 'दूसरा सप्तक' और 'प्रतीक' के प्रकाशन तक यह पल्लवित रही।

कवि अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गरिजाकुमार माथुर और रामविलास शर्मा 'तार-सप्तक' के कवि है। इन्हीं कवियों में से एक महत्त्वपूर्ण कवि भारतभूषण अग्रवाल जी के जीवन तथा उनके रचनात्मक परिचय को हम देखते हैं।

भारतभूषण अग्रवाल आधुनिक कविता की विकास प्रक्रिया का एक दौर 'नई कविता' के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। अग्रवाल जी अज्ञेय के 'तारसप्तक' में संकलित किए गए हैं। उनकी अनेक स्वतंत्र कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। उनका जीवन परिचय तथा रचनाएँ इस प्रकार हैं।

1.1 जन्म तथा मृत्यु -

भारतभूषण अग्रवाल जी का जन्म तुलसी जयंती सन् 2 अगस्त 1919 में मथुरा में हुआ। भारत जी का निधन अचानक 23 जून 1975 में हुआ।

1.2 शिक्षा -

भारत जी ने अपनी प्राथमिक से मैट्रिक तक की शिक्षा उत्तर प्रदेश बोर्ड से की है। 1935 ई. में उनकी मैट्रिक तक की शिक्षा पूरी हुई। 1936 ई. में उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय में की। उन्होंने 1941 ई. में एम.ए. किया है। उन्होंने 1968 ई. में 'हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव' शीर्षक से दिल्ली विश्वविद्यालय में पीएच्.डी. की उपाधि हेतु (की) शोध-कार्य संपन्न किया।[1]

भारत जी दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी रहे हैं। किन्तु वे उससे विशेष प्रभावित नहीं हो सके।

1.3 पारिवारिक वातावरण -

भारत जी की पत्नी का नाम बिंदु अग्रवाल है। उनकी दो बेटियाँ हैं अन्विता अब्बी और अर्पिता।[2] उनके भाई का नाम श्री विद्याभूषण अग्रवाल है। उनकी दो भतीजियाँ हैं, ममता कालिया और प्रतिमा। उनके पिता श्री नत्थीलाल अग्रवाल मैदे के व्यापारी थे। उनका पारिवारिक वातावरण संघर्ष से भरा रहा है। भारत जी का बचपन धुँधले आदर्शवाद से आवृत्त रहा है। वे आर्थिक संघर्ष, रूढिवादिता और अज्ञान आदि सब कष्ट सहन करते आये थे।

1.4 रचनाएँ -

अपूर्व प्रतिभासंपन्न कवि भारत जी में काव्य संस्कारों का प्रस्फुटन शैशव अवस्था से ही होने लगा था। दूसरों के पद्यों को कंठस्थ करके उनकी आवृत्ति करने में ही भारत जी को काव्य की ओर प्रेरित किया। किन्तु धीरे-धीरे भारत जी की कविताओं में स्वयं की बात आने लगी... और इस दिशा में उनके प्रमुख प्रेरणास्रोत थे

---

1. अग्रवाल भारतभूषण, 'अग्नि-लीक' की फ्लैप पर से, पृ.
2.

श्री मैथिलीशरण गुप्त। यही कारण है कि भारत जी की रचनाओं में उपदेशात्मक शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

शैशव अवस्था से ही भारत जी में काव्य संस्कारों का प्रस्फुटन होने के कारण उनका किशोर कवि-मन अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए छटपटाने लगा था। अध्ययनरत होते हुए भी वे अपने आप को या अपने कवि ऱ्हदय को रोक न सके। भारत जी ने काव्य सृजन करना आरम्भ कर दिया था। इस समय वे सिर्फ 17 वर्ष की आयु के थे। उनकी प्रथम कविता 'माधुरी' में प्रकाशित हुई। धीरे-धीरे सन् 1940 के आसपास भारत जी की चर्चा हिंदी साहित्य में होने लगी। उनका रसिक कवि ऱ्हदय आगरावासियों से परिचित हो गया था। उस वक्त वे सेंट जॉन्स कॉलेज में पढ़ते थे। उस कॉलेज के वे अपूर्व मेधावी छात्र होने के साथ-साथ कवि होने के नाते भारत जी का संपर्क अनेक साहित्यकारों से भी होने लगा था। अनेक साहित्याकरों के साथ उनकी जान-पहचान बढ़ रही थी। उस समय देश दूसरों के कब्जें में था। हमारे देश पर अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेजों के अन्याय, अत्याचार के नीचे जनता दबी हुई थी। अनेक कवि अपने देशवासियों के लिए कुछ न कुछ करना चाहते थे। एक ओर भारत जी का कवि मन छटपटा रहा था मगर दूसरी ओर देश का स्वाधीनता संग्राम भी भारत जी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। उन्हीं दिनों आगरा के नवयुवकों को एकत्र करके उनमें जागृति करने का कार्य श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त कर रहे थे। भारत जी ने भी उनमें शामिल होकर अपना सहयोग दिया। गुप्त जी का नेतृत्त्व सफल रहा। गुप्त जी के साथ साथ गुरूवर सत्येन्द्र जी का भी भारत जी के साथ था। इन महान लोगों के आशिर्वाद और सहयोग से भारत जी का स्वर नवीन आयामों तक पहुँचने और सत्य की खोज करनेवाली दृष्टि प्रदान करने की ओर प्रेरित हुआ।

इसी समय भारत जी का प्रथम काव्य संग्रह 'छवि के बंधन'(1941) प्रकाशित हुआ। इस काव्य संग्रह में उनके भावुक प्रणयी ऱ्हदय के मधुर उद्‌गार प्रस्फुटित हुए हैं। किन्तु यह समय मन की कोमलता को जानने का न होकर यथार्थ, वास्तविकता की सच्चाई को जानने का था। भारत जी का कोमल हृदय यथार्थ की एक हल्की-सी चोंट भी सहन न कर सका। ''भारत जी पर 'साम्यवाद' का भारी प्रभाव था। उन्होंने लिखा ही है कि दिन में वे मिल-मालिक की नौकरी करते थे और रात में साम्यवादी साहित्य पढ़ते लिखते थे।''[1] देश की अवस्था बहुत बुरी थी। ''देश की

1.बिन्दु अग्रवाल, भारतभूषण अग्रवाल कुछ यादें : कुछ चर्चाएँ, पृ.15

राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक विसंगतियों ने भारत जी को यथार्थ के कटु सत्य को स्वीकार करने के लिए विवश-सा कर दिया। दूषित समाज ने भारत जी को असामाजिक कमजोरियाँ और गलित स्वार्थ दान में दिए भारत जी की कविताओं ने उन्हीं की पीठ ठोंकी।[1]

भारत जी का मन कोमल भावनाओं से भरा हुआ था। उनके मन का पंछी अनेक रंग-बिरंगे सपने आँखों में लिए कल्पना के पंख लगाकर उँचे नीले गगन में घूम रहा था। जहाँ से उसकी दृष्टि यथार्थ की कठोरभूमि पर आ गिरी।

प्रतिभासंपन्न भारत जी सिर्फ साहित्य की एक ही विधा से जुड़े नहीं थे बल्कि, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचनात्मक साहित्य से भी उन्होंने हिन्दी साहित्य भूमि में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। उनके लगभग दस (10) ''कवितासंग्रह - (1) 'छवि के बंधन' (1941), (2) 'जागते रहो'(1942), (3) 'तार सप्तक'(सहयेागी संकलन,1943), (4)'मुक्तिमार्ग(1947), (5)'ओ अप्रस्तुत मन'(1958), (6) कागज के फूल (मुक्तक,1963, द्वितीय संस्करण,1984), (7)'अनुपस्थित लोग'(1965),(8)'एक उठा हुआ हाथ'(1970, द्वितीय संस्करण,1976), (9) 'उतना वह सूरज है'(1977; द्वितीय संस्करण,1980), (10)'बहुत बाकी है'(1978), चार नाटक - (1)सेतुबंधन 'ध्वनि रूपक'(1955; द्वितीय संस्करण,1979), (2) 'अग्नि-लीक : काव्य रूपक (1976; तृतीय संस्करण,1980), (3) 'पलायन'(रेडिओ नाटक संग्रह, 1982), (4) युग-युग या पांच मिनिट(रेडिओ नाटक संग्रह, 1983)

निबंध तथा आलोचना - 'प्रसंगवश'(1970), 'हिंदी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव'(शोध प्रबंध, 1971), 'कवि की दृष्टि (1978), 'लीक-अलीक'(ललित निबंध, 1980)

कहानी संग्रह - आधे-आधे जिस्म (1978)

उपन्यास - लौटती लहरों की बांसुरी (1965, द्वितीय संस्करण, 1984)

अन्य - बालोपयोगी काव्य-संकलन - 'किसरे फूल खिलाये' (1955) 'मेरे खिलौने तथा अनेक नाटकों और कविताओं के अनुवाद प्रकाशित हुए है।''[2] उन्होंने कविता के

---

1. डॉ.आहुजा मीना ; भारतभूषण अग्रवाल और उनका काव्य, पृ.11
2. बिंदु अग्रवाल; भारतभूषण अग्रवाल कुछ यादें : कुछ चर्चाएँ की फ्लैप पर से,

साथ-साथ गदय लेखन भी किया है। कविता के क्षेत्र में भारत जी ने अनेक प्रयोग किए हैं।

"भारत जी ने अपने प्रथम नाटक 'पलायन की रचना सन् 1942 में की थी। साहित्यकार होने के साथ-साथ वे एक कुशल अभिनेता भी थे। लखनऊ में नाटक (सन् 1948) निर्देशक होने के साथ-साथ भारत जी ने अनेक नाटकों में अभिनय भी किया था किन्तु इन सब में उन्हें अपना कवि रूप ही सबसे अच्छा लगा। वहीं उन्हें विशेष प्रिय रहा है।"[1]

1.5 अनुवादक -

भारत जी एक कुशल अनुवादक भी थे। अनेक भाषाएँ (बंगला, हिंदी, अंग्रेजी) अवगत होने के कारण भारत जी ने लगभग 17 कृतियों का अनुवाद भी किया था। विभिन्न भाषाओं के ज्ञान ने भारत जी में एक विशेष प्रकार की मानसिक भूमि तैयार की जो उनकी सृजन प्रेरणा में विदोष रूप से सहायक हुई।

"भारत जी दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी थे किन्तु वे उससे विशेष प्रभावित नहीं हो सके। पल्लवग्राही ज्ञान में वे स्वयं को अधिकांश कवियों, लेखकों जैसा मानते थे फिर भी इन सबसे बड़ी महत्ता वे अंतः प्रेरणा को देते थे जो जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण मानसिक प्रक्रिया है। जो मानव जीवन में समग्रता, संतुलन, पूर्णता एवं सौदर्य आदि के प्रति आकर्षण और विश्वास उत्पन्न करती है। जिस समन्वयात्मक व्यापकता के प्रति तीव्र अन्वेषण की भावना भारत जी अपने भीतर अनुभव करते थे, वह थी वर्तमान जीवन की जटिलताएँ एवं विसंगतियाँ।"[2]

भारत जी स्वयं यह स्वीकार करते हैं, "आज की सामाजिक व्यवस्था और उसकी आधारगत आर्थिक व्यवस्था एवं मध्य वर्ग के नवयुवक को अप्राकृतिक रूप से महत्त्वाकांक्षी और स्वप्नाभिलाषी बना देती हैं। क्योंकि एक ओर तो वह अपने स्कूल और कॉलेज में पढ़ाई जानेवाली पाठ्य-पुस्तकों से अपने आपको महान व्यक्ति (इण्डिविजुअल) बनाने की सोचता है, और दूसरी ओर अभिजात वर्ग की ऐश्वर्यशीलता उसे सहज ही आकर्षित करती है और जो अतिभावुक होता है वह

---

1. डा.आहुजा मीना; भारतभूषण अग्रवाल और उनका काव्य, पृ.11
2. वही, पृ.11-12

अभिलाषाओं का शिकार होकर सौंदर्य का भूखा, कल्पना के लडडू खानेवाला रंगीन कवि हुए बिना नहीं रह सकता।"[1]

भारत जी की काव्य प्रेरणा स्वयं उनका जीवन है। जीवन में मिले हर सुख दुःख और विषमताओं के बावजूद भी वह जीवन को समृद्ध बनाने के लिए अपने मन की भावनाओं के दीपों को प्रदीप्त करता है।

1.6 विचार प्रणालि -

प्रत्येक कलाकार अपनी युगीन परिस्थितियों से प्रेरणा ग्रहण करता है और अपने भावों को अभिव्यक्त करता है। वास्तव में युग के सत्य से ही साहित्य में रस निर्मिति होती रहती है। भारत जी ने जीवन से ही प्रेरणा ग्रहण की है और जीवन के लिए लिखते रहे हैं। भारत जी इस धरती के कवि हैं। अतः धरती से जुड़े हर साधन से उनकी चेतना जुड़ी हुई है। वे धरती के हर रूप से परिचित हैं। भारत जी ने अपने काव्य सृजन समय कवि ओर पाठक दोनों के दृष्टिकोण से विचार किया है। उनके विचार प्रौढ़, परिमार्जित, तथ्यपरक और सुलझें हुए हैं।

भारतभूषण अग्रवाल आधुनिक कविता के कवि हैं। इसीलिए उनके विचार भी आधुनिक ही हैं। वे न हीं परंपरावादी हैं न हीं प्रयोगवादी कवि हैं। वे पुरानी रीतिरिवाजों को तोडकर देश में आधुनिक वातावरण का निर्माण करना चाहते हैं। वे राजनीति, भ्रष्टाचार का घोर विरोध करते हैं।

"भारत जी की कविताओं में कवि के निजी राग-विरागों की अंभिव्यक्ति होते हुए भी उसमें सार्वजनीयता का संस्पर्श है। निराशा, दुःख, कुंठा, पलायनवादी के स्वर भारत जी की कविताओं में मिलते हैं। फिर भी उनमें आशा के भाव भरें हैं। क्योंकि भारतभूषण आस्था के कवि हैं। वे आशावादी और स्वच्छंदवादी कवि हैं। उनके विचार सुस्पष्ट हैं। वे सर्वहारा, गरीब किसानों का विचार करते हुए सर्व साधारण जनता के साथ क्रांति करना चाहते हैं। उनके विचार क्रांतिकारी हैं। वे मध्य वर्गीय लोगों की व्याकुलता को उजागर करते हैं जो हमें 'जागते रहो' कविता संग्रह में देखने मिलता है। भारत जी में कहीं कहीं वैयक्तिकता और सामाजिकता का द्वन्द्व दिखाई देता हैं।"[2] उनके विचारानुसार

---

1. डॉ.आहुजा मीना; भारतभूषण अग्रवाल और उनका काव्य, पृ.12
2. डॉ.तिवारी संतोषकुमार; नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, पृ.129

'कला व्यक्तिवादी नहीं होती यह तो अब सभी मानते हैं। पर कला व्यक्ति के प्रकाश के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं होती, इसको मान्यता मिलना अभी बाकी है।'[1]

भारत जी अंदर से बहुत दुःखी और निराश थे। उनकी यही भीतरी कशमकश और बाह्य परिस्थितियों ने उन्हें खुली हवा में आने के लिए प्रेरित कर दिया। कवि पीड़ा, घुटन, निराशा, अवसाद आदि से द्वन्द्वग्रस्त और असंतुष्ट होकर महसूस करता है कि -

"एक युग से मैं विरस जीवन बिताता आ रहा हूँ
सब तरफ लगता बड़ा सुनसान
कोई शब्द तक आता नहीं है
गहन तम का पर्त मन पर छा गया है।"[2] (मुक्तिमार्ग -पृ.28)

किन्तु कवि ने जिंदगी से हार नहीं मानी है। हार उनकी विचारों के खिलाफ है।

"भारत जी इन्सानी रिश्तों पर अपनी दृष्टि डालते हुए परिवेश में फैली सडाँध, अगति, उत्पीड़न, दैन्य, वैषम्य, निष्क्रियता, बेबसी आदि का घोर विरोध करते हैं। समाज की ऐसी विसंगति को देखते हुए भारत जी का मत है कि 'इन परिस्थितियों में एक ऐसे साहित्य का जन्म होना चाहिए था जो अगति पर व्यंग्य करता और कृत्रिमता से जूझता। पर लगता है कि कलाकार का विद्रोह भी राज-नीतिज्ञ की भाँति केवल बाहयरूप तक ही सीमित है और वह व्यंग्य इसलिए नहीं करता कि तब आत्म व्यंग्य से कैसे बचेगा?"[3]

भारत जी के विचार व्यंग्यपूण जरूर हैं किन्तु उनमें भी शिष्टता बहुत हैं, उनमें अन्य कवियों की तरह 'क्रूर प्रतिकार' नहीं है। जनतन्त्र की स्थिति को देखते हुए उनकी ये पक्तियाँ उचित हैं -

"जनतन्त्र की टक्की फट गयी है
और शब्दों का एक भयंकर रेला

---

1. डॉ.तिवारी संतोषकुमार; नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, पृ.130
2. वही, पृ.131
3. अग्रवाल भारतभूषण; एक उठा हुआ हाथ, पृ.81

अर्राता हुआ सबको निगलने आ रहा है।"[1]

और यह भी कह सकते हैं कि -

"कभी-कभी हम सब-कुछ ठीक करने की सोचेंगे
और फिर ठीक सोचने पर खुश होकर
कुछ नहीं करेंगे।"[2]

भारत जी पर शुरू से ही मैथिलीशरण गुप्त जी का प्रभाव रहा है। इसीलिए उनकी रचना उपदेशात्मक शैली से शुरू होकर अन्य अलग-अलग अनुभवों को पार करती हैं।

डॉ.प्रेमशंकर मा कत है कि "भारतभूषण के लिए कविताएँ उदार मनुष्याता को प्रेक्षित करने का माध्यम हैं और इसीलिए रंगावट-सजावट में उनकी रूचि कम है जिसे अभिव्यक्ति-कौशल अथवा शिल्प विधान कह दिया जाता है, उसके लिए उनकी कविताओं में ताँक झाँक करना बेकार है, पर एक मानवीय चिन्ता ताप भरा संवेदन और अधनंगा सामायिक परिवेश उनमें बराबर उपस्थित है। अंतर्मुक्ति के साथ उनमें जन-मन की मुक्ति की प्रबल लालसा है, मनुष्य के प्रति रचनात्मक सरोकार और आस्था के साथ। काव्यनाटक 'अग्नि-लीक' इसका सबूत है और उनका नव्यतम काव्य संकलन 'उतना वह सूरज है' भी, जहाँ संवेदनशील मानवीय उष्मा और परस्पर सम्बन्धों के प्रति सहज, अकृत्रिम आत्मीयता बरबस हमें आकृष्ट कर लेती हैं।"[3]

भारतभूषण अनुभव की ईमानदारी पर बहुत जोर देते हैं। कवि भीड में खो जानेवालों की पक्ष में नहीं है। भारत जी के विचार सामाजिक और यथार्थ को सामने लाने वाले हैं। हम उन्हें यथार्थवादी कहें तो अनुचित नहीं होगा।

"भारतभूषण कविता को मानवीय सरोकार की संवेदनकारी अभिव्यक्ति मानते है, साधारण कर्म मात्र नहीं। मनुष्य के प्रति रचनात्मक सरोकार ने भारतभूषण को सामाजिक चेतना की पहचान के लिए मार्क्सवाद की ओर आकृष्ट किया, पर 'तार-सप्तक' के उनके वक्तव्य से यह पता चलता है कि जब समाजवादी दर्शन राजनीति का पिछलगुआ बनकर रचना पर कोड़े की मार करने लगा तब संवेदनशील कवि ने उससे

1. अग्रवाल भारतभूषण; एक उठा हुआ हाथ - पृ.51
2. वही, पृ.45
3. डॉ.तिवारी संतोषकुमार; नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - पृ.132

नाता तोड़ लिया। पर जहां तक मानवीय सदाशयता का सवाल है, उनकी कविताएँ बराबर इंसानी चिंता की दिशा में सक्रिय रहीं। भारतभूषण की रचनाओं में एक मानवीय एहसास हमेशा मौजूद रहा है और यदि ऐसा न होता तो रूमानी तेवरों से अपनी काव्य-यात्रा का आरंभ करने वाला कवि कहीं बीच में ही लड़खड़ा भी सकता था, या फिर स्वयं को दुहराता रह जाता - एक ही बिंदु पर रूका, ठहरा।"[1]

प्रेमशंकर के मतानुसार "भारतभूषण इंसानियत और रचना को साथ-साथ लेकर चलना चाहते हैं, जो आज के जमाने में बड़े जोखिम का काम है। सचाई तो यह है कि व्यापक मानवीय संवेदनों को रचना में संपूर्ण ईमानदारी के साथ व्यक्त कर पाना एक निरंतर प्रक्रिया है जहाँ रचनाकार को अपनी वैयक्तिक उपस्थिति पर ज्यादा जोर भी नहीं देना चाहिए, क्योंकि तब उसका 'मैं' रचना पर हावी हो जायेगा और उसके सामाजीकरण की प्रक्रिया कहीं बीच में ही टूट जायेगी। भारतभूषण का स्वर विनम्र है और वे विलयित होना भी जानते हैं, पर उसमें मानवीय उदारता से उपजी एक सहज, सात्विक आस्था है। वे रचना में आक्रामक नहीं हो पाते, यहां तक कि तुक्तक और व्यंग्य में भी वे जुझारू हमला नहीं करते। जीवन में कई छोटी-मोटी सफलताएँ उनके हाथ से शायद इसीलिए फिसल गयीं, क्योंकि वे मनुष्य और कवि का दुहरा दायित्व निभाना चाहते थे।"[2]

भारत जी प्रखर बौध्दिक चेतना के कवि हैं। वे आस्था और विश्वास के कवि हैं। आधुनिक युग के मानव को उन्होंने आस्था और आशा का संदेश दिया है। मानव मंगल की भावना के लिए वे अपनी सफल साधना की उपलब्धियों को भी त्यागने के लिए तैयार हो गये है। भारत जी ने अपनी काव्य-प्रतिभा को सामाजिक यथार्थ के मध्य प्रतिष्ठित किया हैं।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि भारतभूषण अग्रवाल आस्था के कवि हैं। उनके विचार बहुत ही उच्च प्रति के हैं। छायावाद के बाद हिंदी साहित्य में जो काव्य प्रवृत्तियाँ प्रकाशित हुई, उनमें खासकर 'प्रयोगवाद' और 'नयी कविता' के कवि

---

1. अग्रवाल बिन्दु; भारतभूषण अग्रवाल कुछ यादे : कुछ चर्चाएं, पृ.59
2. वही, पृ.61

हैं। वे अज्ञेय के 'तार सप्तक' में संकलित किए गए हैं। उनकी अनेक स्वतंत्र कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

भारत जी का पारिवारिक वातावरण संघर्ष से भरा रहा है। उन्हें अनेक कष्टों से गुजरना पड़ा है। भारत जी में काव्य संस्कारों का प्रस्फुटन शैशव अवस्था से ही होने लगा था। उनके प्रमुख प्रेरणा स्रोत श्री मैथिलीशरण गुप्त हैं। इसीलिए भारत जी की रचनाओं में उपदेशात्मक शैली का प्रभाव दिखाई देता है । अध्ययनरत होते हुए भी वे अपने आप को या अपने कवि हृदय को रोक न सके। 17 वर्ष की आयु में उनकी प्रथम कविता 'माधुरी' में प्रकाशित हुई। धीरे-धीरे उनकी चर्चा हिंदी साहित्य में होने लगी। हमारे देश पर अंग्रेजों का राज्य था। भारत जी देश-वासियों के लिए कुछ करना चाहते थे। देश की अवस्था बहुत बुरी थी। देश की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक विसंगतियों ने भारत जी को यथार्थ के कटु सत्य को स्वीकार करने के लिए विवश-सा कर दिया। उनकी काव्य प्रेरणा स्वयं उनका जीवन है।

भारत जी ने जीवन से प्रेरणा ग्रहण की है और जीवन के लिए लिखते रहे हैं। उनके विचार आधुनिक है। उनके विचारों में सामाजिक सच्चाई है। वे यथार्थ की कटुता से टकरा गये हैं। उनके मन में गरीब, शोषित, करूण वर्ग के प्रति आस्था हैं। वे जिंदगी से हार मानने वालों में से नहीं हैं। उनके समस्त शब्द में यथार्थ की अनुभूति झलकती है। उन्होंने अपने युग के परिवेश को पूरी तरह जाना है, समझा है और परिस्थिति के अनुरूप अपने विचार व्यक्त किए हैं। जिंदगी से हार हुए लोगों को चेतावनी दी है। उन्होंने राजनीति और भ्रष्टाचार का विरोध किया है। उन्होंने अपनी कविता में यथार्थ जीवन का चित्रण किया हैं।